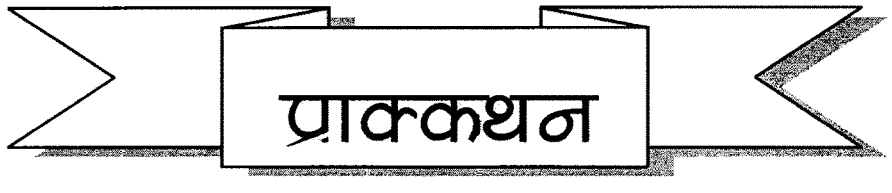
प्राक्कथन

प्राक्कथन

मोहनदास नैमिशराय जी ने सन 2005-2006 में हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर में आयोजीत संगोष्टी में व्याख्यान दिया था | उससे प्रभावित होकर मैने उनके उपन्यासों पर अनुसंधान करने का निर्णय लिया | एम्.फिल्. के लिए शोध-विषय का सिलसिला शुरू हुआ | तब मैने गुरूवर्य डॉ. सुलोचना न. अंतरेड्डी से चर्चा की | शायद उन्होंने मेरी रूचि को ताड़ लिया हो और उन्होंने मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास पढ़ने की सलाह दी | मैने उस समय मोहनदास नैमिशराय के 'मुक्तिपर्व' और 'वीरांगना झलकारी बाई' उपन्यास पढ़े | फिर मेरे निर्णय को अंतिम रूप देने हेतु उनने विचार विमर्श किया और मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों पर अनुसंधान करने का निश्चय किया |

मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों पर अनुसंधान करने से पहले मेरे मन में निम्नलिखित सवाल उपस्थित हुए |

1. मोहनदास नैमिशराय जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व कैसा है ?
2. मोहनदास नैमिशराय ने प्राय: दलितों को ही अपने उपन्यासों का विषय क्यों बनाया ?
3. मोहनदास नैमिशराय जी का साहित्य स्माज से क्या अपेक्षा रखता है ?
4. दलितों की किन-किन समस्याओं को उन्होंने उजागर किया है ?
5. क्या इनके उपन्यासों में दलित जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है ?
6. दलित उपन्यासों के पीछे मोहनदास नैनिशराय जी की क्या मानसिकता है ?
7. मोहनदास नैमिशराय दलित जीवन का चित्रण करने में कहाँ तक सफल हुए हैं ?

विवेच्य उपन्यासों के अध्ययन के उपरांत उपयुक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के

लिए तथा अध्ययन की सुविधा के लिए मैने उसे निम्नलिखित अध्यायों में विभाजीत कर प्रस्तुत शोध-विषय का विवेचन-विश्लेषण किया है |

■ अध्याय विभाजन :

■ प्रथम अध्याय - 'मोहनदास नैमिशराय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'

इस अध्याय में मोहनदास नैमिशराय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया है | व्यक्तित्व में जन्म, बचपन, शिक्षा, नौकरी, विवाह आदि बातों का जिक्र है | तो कृतित्व में पूरे साहित्य का चित्रण किया है |

■ दवितीय अध्याय - 'मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास : वस्तुपरक अध्ययन'

इस अध्याय में उनके उपन्यासों के कथ्य का विवरण किया है | सबसे पहले शीर्षक का अर्थ बताया गया है | फिर दो उपन्यासों की कथावस्तु की समीक्षा अर्थात उपन्यासकार ने जिन समस्याओं का चित्रण उपन्यास में किया है उनका विस्तार से चित्रण किया है |

■ तृतीय अध्याय - 'मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास : दलित चेतना'

तृतीय अध्याय में दलित, चेतना शब्द की व्युत्पत्ति, चेतना के प्रकार,दलितोंद्धारक एवं लेखक के उपन्यासों में दलित चेतना - गुलामी के प्रति विद्रोह, रूढ़िग्रस्त दलितों में चेतना, जातीय विद्रोह, शिक्षा के प्रति चेतना, अवैध व्यवहार के प्रति विद्रोह, दलितों में कर्तव्य निर्वाह, दलित नारी में चेतना, नेतृत्वकुशल दलित नारी आदि का चित्रण किया है |

■ चतुर्थ अध्याय - 'मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन की समस्याएँ'

इस अध्याय में नैमिशराय जी ने दलित स्वातंत्र्य की समस्या, गुलामी की समस्या, शिक्षा समस्या, मंदिर प्रवेश की समस्या, जातिभेद की समस्या, आंतरजातीय विवाह की समस्या, न्याय संबंधी समस्या, आदि समस्याओं को चित्रित करने का प्रयास किया है |

■ पंचम अध्याय - 'समकालीन उपन्यासों की दलित चेतना में नैमिशराय का योगदान'

इस अध्याय में नैमिशराय जी के समकालीन प्रधान उपन्यासकारों को लिया गया

है | इसमें जयप्रकाश कर्दम का छप्पर, संजीव का धार एवं गिरिराज किशोर का परिशिष्ट को प्रधानता दी गयी है | इस प्रधान उपन्यासों में नैमिशराय जी के उपन्यासों का योगदान दिखाया है |

✖ उपसंहार -

सामुग्री संकलन, गहन अध्ययन, मनन, विवेचन-विश्लेषण के उपरांत प्राप्त निष्कर्षों को संक्षेप में दर्ज किया है | तथा प्राप्त उपलब्धियों को प्रस्तुत किया है |

✖ शोधकार्य की मौलिकता -

1. इस शोध प्रबंध में नैमिशराय जी के उपन्यासों में दलित जीवन का यथार्थ अंकन हुआ है |
2. नैमिशराय ने अपने उपन्यासों में दलित समाज की समस्याओं को सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया हैं |
3. नैमिशराय ने अपने उपन्यासों से दलितों में चेतना, प्रगतिवादी विचारधारा को प्रवाहित करने का प्रयास किया है |
4. हिंदी साहित्य में हाशिए पर पड़े हुए दलित साहित्य को केंद्रोन्मुख करने का प्रयास किया है |
5. नैमिशराय ने दलित नारी में भी वीरता होती है, उसे स्पष्ट किया है |
6. नैमिशराय उपन्यासों से शिक्षा के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाना चाहते है |

✖ संदर्भ ग्रंथ सूची -

आधार ग्रंथ

समीक्षा ग्रंथ

शब्द कोश

पत्र-पत्रिकाएँ

ऋणनिर्देश

मेरे इस लघु शोध-प्रबंध का पूरा लेखन करते समय अनेक व्यक्तियों का सहकार्य मुझे प्राप्त हुआ | उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ |

जेष्ठ समीक्षक एवं मेरे पूजनीय गुरूवर्य डॉ.अर्जुन चव्हाण जी तथा गुरूवर्य डॉ. सुलोचना न.अंतरेड्डी जी के स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन में मैंने यह शोध कार्य पूरा किया | उनके मार्गदर्शन के बिना यह लघु-प्रबंध पूरा कर पाना लगभग असंभव था | अत: उनके और उनके परिवार के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ | पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग अध्यक्ष प्रो.डॉ.टी.आर.पाटील जी ने भी मुझे हर समय प्रोत्साहित किया है | अत: उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ | शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में कार्यरत डॉ.शोभा निंबाळकर जी ने अनमोल समय निकालकर मुझे मार्गदर्शन किया अत: उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ | प्राचार्य डॉ.वसंत हेलावी जी ने भी मुझे हर समय प्रोत्साहित किया | अत: उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ |

पहली कक्षा से लेकर आज तक मेरी शिक्षा के लिए अपनी जरूरतों को मन में दबाती रही मेरी माँ और मेरे पिताजी हमेशा कर्म को ही देवता मानते रहे हैं | मेरे लिए हमेशा चिंतीत रहनेवाली मेरी माँ और मेरे पिताजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए मेरे पास शब्दों का भंड़ार भी कम है | मेरे शिक्षा के प्रति आग्रही रहे मेरे पूजनीय दादाजी भीमराव थोरात (आबा), मामा वाळकृष्ण थोरात, उत्तम थोरात, रंगराव थोरात, वसंत थोरात, अशोक थोरात तथा मेरी पूजनीय दादी माँ रत्नाबाई थोरात, मामी कांचन थोरात, संगीता थोरात, सुनीता थोरात, मेरी बहनें भारती थोरात, अनिता गावडे, उषा गावडे आदि के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ |

मेरे मित्रों में नागेश कुटे, रविंद्र माळी, सुनिल खाडे, कृष्णा कांबळे, सागर पाटील, विलास शेंडगे, मेघनाथ शिंगाडे, महादेव पाटोल, जयसिंग चवरे, अमित गायकवाड, भीमाशंकर गायकवाड, नितीन गायकवाड, कु.छाया माळी, कु.वैशाली चौगुले, सागर चौगुले, रवी शिंदे, अनिल मकर, दिलीप मदने, सचिन धायगुडे, धनंजय इनामदार, सौरभ अंतरेड्डी, बाळासाहेब कामान्ना, अशोक मरळे, किरण देशमुख, दिपक तुपे, वालचंद नागरगोजे, युवराज मुलये, अजित लिपारे, मातोजी जगताप, प्रशांत धनवडे आदि के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ तथा हमारे विभाग के वरिष्ठ लिपीक डॉ.मंगेश कोळेकर और सहायक श्री.अवघडे मामा जी का भी मैं आभारी हूँ | साथ ही मेरे लघु शोध प्रबंध का टंकन का कार्य और प्रूफ रिडींग का कार्य अच्छी तरह से करनेवाले मेरे सहयोगी मित्र श्री.शितल पुणेकर जी एवं श्री.अविनाश कांबले का भी मैं आभारी हूँ |

ग्रंथालय के सभी कर्मचारियों जिन्होंने मुझे समय पर किताबें उपलब्ध करायी उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ |

स्थान : कोल्हापुर

तिथि :

श्री.कोळेकर संतोष वसंत

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.